मुस्तफ़ाबाद में 'नौजवान भारत सभा' द्वारा तीन दिवसीय मेडिकल कैम्प

नौजवान भारत सभा (नौभास) द्वारा पूर्वी दिल्ली के करावल नगर के एक मज़दूर इलाक़े मुस्तफ़ाबाद में दिनांक 27, 28, 29 को मेडिकल कैम्प आयोजित किया गया जिसमें योग्य डॉक्टरों द्वारा लगभग 500 लोगों को मुफ़्त परामर्श, प्राथमिक जाँच-पड़ताल एवं ज़रूरत के मुताबिक़ दवाइयों का वितरण किया गया। जाँच के दौरान औरतों में ख़ून की कमी पाई गई। जिसका कारण उन्हें पर्याप्त भोजन न उपलब्ध हो पाना है। वहीं बच्चों में चमड़ी के रोग व एलर्जी के लक्षण ज़्यादा पाए गए। जोकि वहाँ साफ़-सफ़ाई की कमी की वजह से है। इसके अलावा विभिन्न पेशे में काम की ख़राब स्थितियों से सम्बन्धित बीमारियाँ थीं। जिन बीमारियों में गरदन दर्द, पीठ दर्द आदि बीमारियों के गम्भीर लक्षण पाए गए। वहीं पर साफ़ पानी न उपलब्ध होने के चलते भी पेट की बीमारियों के लक्षण पाए गए।

इसी कैम्प में एक पोस्टर प्रदर्शनी द्वारा लोगों को बीमारियों के कारणों और उसके जिम्मेदार व्यवस्था का परदाफ़ाश किया गया। जिसमें आज देश में स्वास्थ्य स्थितियों की तस्वीर पेश की गई कि देश में भूख, कुपोषण व ग़रीबी के चलते लोग बीमारी व रोग से ग्रस्त हैं। काम के ज़्यादा घण्टे, कम आराम और ख़राब काम की स्थितियों की मुख्य वजह है बीमारी और रोग की। कैम्प के दौरान लगातार नौभास के वॉलण्टियर लगातार मज़दूरों व आम मेहनतकश आबादी को बता रहे थे कि निःशुल्क चिकित्सा का अधिकार जन्मसिद्ध अधिकार है और इसे उन्हें लड़कर लेना ही होगा।

(कार्यालय संवाददाता)

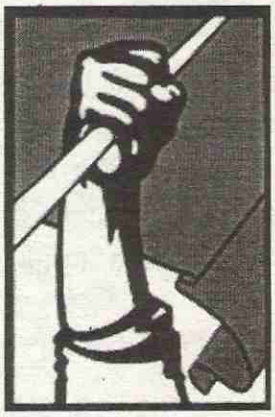

15 अगस्त को नक़ली और झूठी आज़ादी का भण्डाफोड़ अभियान

नौजवान भारत सभा द्वारा 15 अगस्त को नक़ली और झूठी आज़ादी का भण्डाफोड़ अभियान चलाया गया जिसमें लगभग 35 नौभास के कार्यकर्त्ता शामिल हुए। इसकी शुरुआत करावल नगर स्थित नौभास के कार्यालय से गगनभेदी नारों के साथ हुई। 'कैसी खुशियाँ, आज़ादी का कैसा शोर ! राज कर रहें हैं, कफ़नख़सोट-मुर्दाख़ोर!!', 'किसकी है जनवरी, किसका अगस्त है! जनता यहाँ त्रस्त है, नेता मस्त है!!', 'नेताओं का बोलबाला, जनता का पिट रहा दिवाला!', 'पूँजीपतियों से यारी है! जनता से ग़द्दारी है!!', '30 करोड़ हैं बेरोज़गार, कौन है इसका ज़िम्मेदार! टाटा बिड़ला की सरकार! सब हैं इसके ज़िम्मेदार!!', 'गाँव शहर में अलख जगाकर, विदेशी लूट मिटायेंगे! देसी कफ़नख़सोटों को भी लड़कर मार भगायेंगे! कसम शहीदों की भारत में लोकस्वराज बनायेंगे!!', 'ख़त्म करो पूँजी का राज, लड़ो बनाओ लोकस्वराज!', आदि नारे लगाये गये। साइकिलों पर सवार कार्यकर्त्ताओं ने साइकिल के आगे इन्क़लाबी नारों और पूँजीवादी व्यवस्था के भण्डाफोड़ नारों की तख़्तियाँ लगाई हुई थी तथा जोशो-ख़रोश के साथ 'आँधी आये या तूफ़ान, डटे रहेंगे नौजवान' के नारे के साथ बरसात में ही अभियान की शुरुआत कर दी थी। निम्न मध्यवर्गीय इलाक़ों के साथ-साथ, मज़दूर इलाक़ों में जगह-जगह लोकस्वराज का पर्चा बाँटते हुए लोगों से नयी आज़ादी की लड़ाई के लिए उठ खड़े होने आह्वान किया गया। जगह-जगह नुक्कड़ सभाओं की शुरुआत में गगनभेदी नारों और स्काउट ताली के साथ लोगों को गोल घेरे के इर्दगिर्द इकट्ठा किया गया। कार्यकर्त्ताओं ने क्रान्तिकारी गीत 'तोड़ो बन्धन तोड़ो' के साथ शुरुआत की, बारी-बारी से कार्यकर्त्ताओं ने इकट्ठा हुए समूह को 1947 में मिली तथाकथित आज़ादी की असलियत का परदाफ़ाश करते हुए बताया कि 63 साल पहले मिली आज़ादी का फ़ायदा सिर्फ़ 15 फ़ीसदी पूँजीपतियों और उनके टुकड़खोर, परजीवी, भ्रष्ट नेता-मन्त्री, नौकरशाह, पुलिस-फ़ौज के अफ़सरान, ठेकेदारों, दलालों, सट्टेबाज़ों, डॉक्टरों-इंजीनियरों-प्रोफ़ेसरों, अख़बार-टी.वी. के ऊँचे पदों वाले लोगों आदि को मिला और दूसरी तरफ़ देश की 84 करोड़ (77 फ़ीसदी आबादी) जिसमें मेहनत-मजूरी करके जीने वालों की साठ करोड़ आबादी शामिल है वह सिर्फ़ 20 रुपये या इससे भी कम आय पर गुज़ारा करती हुए भूख, कुपोषण, बीमारी, भयानक दरिद्रता की शिकार है। इसका वास्तविक हल एक मज़दूर क्रान्ति द्वारा ही असली आज़ादी और लोकतन्त्र की स्थापना सम्भव है। इसके लिए लोगों को एक बार फिर से